P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय पुरातात्विक इतिहास और विकास

खुशवन्त सिंह
शोध छात्र,
इतिहास विभाग,
डी0 एस0 बी0 परिसर,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय,
नैनीताल

सारांश

पुरातत्व विज्ञान मुख्य रूप से मनुष्यों द्वारा छोड़े गये पर्यावरण डेटा एवं भौतिक संस्कृति जैसे कि कला कृतियां, वास्तुकला एवं सांस्कृतिक परिदृश्य आदि की पुनः प्राप्ति एवं विश्लेषण द्वारा अतीत कालीन मानव गतिविधि का अध्ययन है। चूंकि पुरातत्व विज्ञान विभिन्न प्रक्रियाओं का प्रयोग करता है, इसे विज्ञान और विज्ञानोत्तर विषय, दोनों माना जा सकता है। अमेरिका में इसे मानवशास्त्र का भाग माना जाता है। यद्यपि यूरोप में इसे एक भिन्न अनुशासन का दर्जा प्राप्त है।भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, पुरालेख और मुद्राशास्त्र के अलावा, आरंभ से उत्खनन में अनुसंधान, खोज, सरंक्षण मंदिरों और धर्म निरपेक्ष भवनों के वास्तुकला सर्वेक्षण जैसे विषयों पर वार्षिक और विशेषांक दोनों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित करता है। इसके अलावा, यह केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों और पुरातत्वीय स्थलों पर गाइड पुस्तकों, फोल्डर/विवरणिका, पोर्टफोलियों और चित्र पोस्टकार्डो के रूप में लोकप्रिय साहित्य को प्रकाशित करता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का प्रकाशन ए.कनिंघम, प्रथम महानिदेशक द्वारा आंरभ किया गया, जिन्होनें अपने सहयोगियों के साथ 1862–63 से आगे अपने भ्रमण के सभी निष्कर्षों को गंभीरतापूर्वक दस्तावेज के रूप में तैयार किया। 1874 में, पुरालेख अवशेषों पर विस्तृत शोध वाली नई साम्राज्य श्रृखंला नामक एक नई श्रृखंला आरंभ की गई जो 1933 तक जारी रही। राष्ट्रीय महत्व के प्राचीन स्मारकों तथा पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेषों के रख रखाव के लिए सम्पूर्ण देश को 24 मंडलों में विभाजित किया गया है। संगठन के पास मंडलों, संग्रहालयों, उत्खनन शाखाओं, प्रागैतिहासिक शाखा, पुरालेख शाखाओं, विज्ञान शाखा, उद्यान शाखा, भवन सर्वेक्षण परियोजना, मंदिर सर्वेक्षण परियोजनाओं तथा अन्तरजलीय पुरातत्व स्कन्ध के माध्यम से पुरातत्वीय अनुसंधान परियोजनाओं के संचालन के लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षित पुरातत्वविदों, सरंक्षकों, पुरालेख विदों, वास्तुकारों तथा वैज्ञानिकों का कार्य दल है।

मुख्य शब्द : वनस्पति पुरातत्व, आर्कियोमेट्री, जीव पुरातत्व, युद्ध पुरातत्व, पर्यावरणीय पुरातत्व, मानव जाति विज्ञान पुरातत्व, प्रायोगिक पुरातत्व, भू–पुरातत्व, समुद्रीय पुरातत्व।

प्रस्तावना

इतिहास अपने गर्भ मे अनेक सम्भावनाओं को छिपाये हुए हैं। परन्तु इन सम्भावनाओं को हम तब तक समाज के सामने नहीं ला सकते जब तक इनका प्रमाण न मिल जाय। सबसे अधिक विश्वसनीय प्रमाण पुरातात्विक जानकारी को मान जाता हैं। इनके माध्यमसे हम निःसंकोच अपने तथ्यो को समाज के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं। आज पुरातत्व अनेक शाखाओं में बंट गया हैं। ये विभिन्न शाखायें अपने भिन्न– भिन्न तरीको से अपने लक्ष्यो को प्राप्त करते हैं। अधोलिखित गद्यांश में इन्ही आयामो को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं।

पुरातत्व शास्त्र

पुरातत्व शास्त्र वह विज्ञान है जो पुरानी चीजों का अध्ययन व विश्लेषण करके मानव संस्कृति के विकास क्रम को समझने एवं उसकी व्याख्या करने का कार्य करता है। यह विज्ञान प्राचीन काल के अवशेषों और सामग्री के उत्खनन के विश्लेषण के आधार पर अतीत के मानव समाज का सांस्कृतिक वैज्ञानिक अध्ययन करता है। इसके लिये पूर्वजों द्वारा छोड़े गये पुराने वास्तुशिल्प, औजारों, युक्तियों, जैविक–तथ्यों और भू–रूपों आदि का अध्ययन किया जाता है। संस्कृत के शब्द 'पुरातन' से बना 'पुरातत्व' यूनानी शब्द 'आर्कियोलोजिया' से निर्मित 'आर्कियोलोजी' शब्द का हिन्दी तर्जुमा और पर्याय है।

पुरातत्व विज्ञान मुख्य रूप से मनुष्यों द्वारा छोड़े गये पर्यावरण डेटा एवं भौतिक संस्कृति जैसे कि कला– कृतियां, वास्तुकला एवं सांस्कृतिक परिदृश्य आदि की पुनः प्राप्ति एवं विश्लेषण द्वारा अतीत कालीन मानव गतिविधि का अध्ययन है। चूंकि पुरातत्व विज्ञान विभिन्न प्रक्रियाओं का प्रयोग करता है, इसे

विज्ञान और विज्ञानोत्तर विषय, दोनों माना जा सकता है। अमेरिका में इसे मानवशास्त्र का भाग माना जाता है। यद्यपि यूरोप में इसे एक भिन्न अनुशासन का दर्जा प्राप्त है।

पुरातत्व विज्ञान चार लाख साल पहले पूर्वी अफ्रीका में पत्थर के औजारों के विकास से लेकर हाल के दशकों तक (पुरातत्व जीवाश्म विज्ञान नहीं है) का अध्ययन करता है। पुरातत्व विज्ञान सबसे उपयोगी है प्रागैतिहासिक समाज के बारे में जानने के लिये, जब इतिहासकारों द्वारा अध्ययन के लिए कोई भी लिखित अभिलेख न हो। यह मनुष्यों के कुल इतिहास का 19 प्रतिशत है, पाषाण काल से किसी भी समाज में अक्षर ज्ञान के आगमन तक। पुरातत्व विज्ञान के कई लक्ष्य हैं। मानव विकास से लेकर सांस्कृतिक विकास और सांस्कृतिक इतिहास तक।

पुरातत्व विज्ञान में अतीत के बारे में जानने के लिए सर्वेक्षण, उत्खनन और अंततः एकत्र किये गए आंकड़ों का विश्लेषण शामिल है। व्यापक दायरे में पुरातत्व विज्ञान पार अनुसंधानिक शोध जैसे यह मानव विज्ञान, इतिहास, कला इतिहास, क्लासिक, मानव जाति विज्ञान, भूगोल, भूविज्ञान, भाषा विज्ञान, लाक्षणिकता, भौतिक विज्ञान, सूचना विज्ञान, सांख्यिकी, जीवाश्म विज्ञान आदि पर निर्भर करता है।

इतिहास

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (अंग्रेंजी संक्षिप्त नाम भा.पु.स. अथवा ए.एस.आई.) भारत सरकार के संस्कृति विभाग के अर्न्तगत एक सरकारी एजेंसी है, जो कि पुरातत्व अध्ययन और सांस्कृतिक स्मारकों के अनुरक्षण के लिये उत्तरदायी होती है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का प्रमुख कार्य राष्ट्रीय महत्व के प्राचीन स्मारकों तथा पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों का रखरखाव करना है। इसके अतिरिक्त प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 के प्रावधानों के अनुसार यह देश में सभी पुरातत्वीय गतिविधियों को विनियमित करता है। यह पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972 को भी विनियमित करता है।

स्थापना

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण भारत में पुरातात्विक अनुंसधान करने वाली सर्वोच्च संस्था है। यह न सिर्फ अनुसंधान, बल्कि प्राचीन स्मारकों के संरक्षण एवं सुरक्षा की भी व्यवस्था करने की जिम्मेदारी निभाती है। यह प्रागैतिहासिक, आद्य–ऐतेहासिक तथा अन्य प्राचीन स्थलों के समस्यायुक्त अनुसन्धान एवं बड़े पैमाने पर उनके उत्खनन के कार्यो को सम्पन्न करवाती है। इसके साथ ही यह संस्था वास्तुकला सर्वेक्षण, स्मारकों के आस–पास की भूमि को ठीक करना, मूर्तियों, स्मारकों तथा संग्रहालय वस्तुओं का रासायनिक रख–रखाव, शिलालेखों से सम्बद्व पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के प्रकाशन आदि के कार्य में भी संलग्न है। यह विभाग पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय के अर्न्तगत संस्कृति विभाग के संलग्न कार्यालय के रूप में कार्य करता है। इस विभाग के प्रमुख 'महानिदेशक' होते हैं।

संरक्षण तथा परिरक्षण

राष्ट्रीय महत्व के प्राचीन स्मारकों तथा पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेषों के रख रखाव के लिए सम्पूर्ण देश को 24 मंडलों में विभाजित किया गया है। संगठन के पास मंडलों, संग्रहालयों, उत्खनन शाखाओं, प्रागैतिहासिक शाखा, पुरालेख शाखाओं, विज्ञान शाखा, उद्यान शाखा, भवन सर्वेक्षण परियोजना, मंदिर सर्वेक्षण परियोजनाओं तथा अन्तरजलीय पुरातत्व स्कन्ध के माध्यम से पुरातत्वीय अनुसंधान परियोजनाओं के संचालन के लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षित पुरातत्वविदों, सरंक्षकों, पुरालेख विदों, वास्तुकारों तथा वैज्ञानिकों का कार्य दल है। यद्यपि आद्य ऐतिहासिक काल में सरंचना के सरंक्षण के प्रमाण मिलते हैं जैसा कि जूनागढ़, गुजरात में साक्ष्य मिला है, यह उन संरचनाओं पर किए गए थे जो तत्कालीन समाज के लिए लाभकारी थे। फिर भी स्मारकों को उनके औचित्य के अनुरूप परिरक्षित करने की आवश्यकता को समझने का श्रेय मुख्यतः ब्रिटिशों को जाता है जो संयोग से पूर्व कालों से कम न था। कला विध्वंस को रोकने के लिए कानूनी जामा पहनाने के लिए आरम्भ में दो प्रयास किए गए थे। दो विधान बनाए गए नामतः बंगाल के रेगुलेशन ऑफ 1810 और मद्रास रेगुलेशन ऑफ 1817।

प्रकाशन

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, पुरालेख और मुद्राशास्त्र के अलावा, आरंभ से उत्खनन में अनुसंधान, खोज, सरंक्षण मंदिरों और धर्म निरपेक्ष भवनों के वास्तुकला सर्वेक्षण जैसे विषयों पर वार्षिक और विशेषांक दोनों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित करता है। इसके अलावा, यह केन्द्रीय रूप से संरक्षित स्मारकों और पुरातत्वीय स्थलों पर गाइड पुस्तकों, फोल्डर/विवरणिका, पोर्टफोलियों और चित्र पोस्टकार्डो के रूप में लोकप्रिय साहित्य को प्रकाशित करता है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का प्रकाशन ए.कनिंघम, प्रथम महानिदेशक द्वारा आंरभ किया गया, जिन्होनें अपने सहयोगियों के साथ 1862–63 से आगे अपने भ्रमण के सभी निष्कर्षों को गंभीरतापूर्वक दस्तावेंज के रूप में तैयार किया। 1874 में, पुरालेख अवशेषों पर विस्तृत शोध वाली नई साम्राज्य श्रृखंला नामक एक नई श्रृखंला आरंभ की गई जो 1933 तक जारी रही।

गतिविधियाँ

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की प्रमुख गतिविधियाँ निन्नलिखित हैंः–

1. पुरातात्विक अवशेषों तथा उत्खनन कार्यो का सर्वेक्षण।
2. केन्द्र सरकार के सुरक्षा वाले स्मारकों, स्थलों और अवशेषों का रख रखाव और परिरक्षण।
3. स्मारकों और भग्नावेशेषों का रासायनिक बचाव।
4. स्मारकों का पुरातात्विक सर्वेक्षण।
5. शिलालेख संबंधी अनुसंधान का विकास और मुद्राशास्त्र का अध्ययन।
6. स्थल संग्रहालयों की स्थापना और पुर्नगठन।
7. विदेशों में अभियान।
8. पुरातत्व विज्ञान में प्रशिक्षण।
9. तकनीकी रिपोर्ट और अनुसंधान कार्यो का प्रकाशन।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण कुल पाँच हजार से ज्यादा स्मारकों और ढांचों की देखरेख कर रहा है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अपने 21 मंडलों और 3 मिनी मंडलों के माध्यम से अपने सरंक्षण वाले स्मारकों का बचाव और सरंक्षण करता। प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल व विशेष अधिनियम, 1958 के अंतर्गत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने देश में लगभग 3656 स्मारकों व स्थलों को राष्ट्रीय महत्व का घोषित किया है, जिनमें 21 सम्पत्तियॉ यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल में शामिल हैं। 144 वर्ष पहले हुई अपनी स्थापना के बाद से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण बहुत विशाल संगठन का आकार ले चुका है और पूरे भारत में इसके कार्यालयों, शाखाओं और मंडलों का जाल फैला है। गुजरात का पावगढ़ पार्क, मुम्बई का छत्रपति शिवाजी टर्मिनस, जो पहले विक्टोरिया टर्मिनल था, रेलवे स्टेशन और गंगैकोंडाचोलापुरम का बृहदेश्वर तथा दारासुरम का ऐरावतेश्वरैया मंदिर, जो तंजावूर के बृहदेश्वर मंदिर परिसर का विकास है और महान चोला मंदिरों के नाम से विख्यात है। यूनेस्को द्वारा 2004 में विश्व सांस्कृतिक धरोहर सूची में शामिल किए गये हैं।

पुरातत्व की मुख्य शाखाएं

पुरातत्व अपने आप में एक विस्तृत विषय है। इसलिए एक पुरातत्वविद का काम उसकी विशेषज्ञता पर निर्भर करता है। इसकी मुख्य शाखाएं इस प्रकार हैं:

वनस्पति पुरातत्व

उत्खनन से निकली फसलों या पौधों के अध्ययन के जरिये इतिहास में लोगों के खानपान, खेती–बाड़ी, उस समय की जलवायु स्थिति आदि को जानना।

आर्कियोमेट्री

पुरातत्व की प्रकिया और उसके विश्लेषणात्मक इंजीनयरिंग के सिद्धांतों का अध्ययन।

जीव पुरातत्व

वह शाखा जो जीवों के अवशेषों के अध्ययन से उनके घरेलूपन, शिकार की आदतों आदि को जानती है।

युद्ध पुरातत्व

प्रमुख युद्ध क्षेत्रों का गहन उत्खनन का विषय।

पर्यावरणीय पुरातत्व

इतिहास में पर्यावरण के समाज पर असर का अध्ययन।

मानवजाति विज्ञान पुरातत्व

वर्तमान समय के मानव जाति विज्ञान के डाटा को इतिहास के मानव जाति समाज के डाटा से तुलना ताकि उसके बारे में अधिक जानकारी हासिल की जा सके।

प्रायोगिक पुरातत्व

विलुप्त हो चुकी सामग्री और प्रक्रियाओं को प्रायोगिक स्तर पर हूबहू तैयार करना ताकि उनकी कार्यशैली की बेहतर समझ प्राप्त हो।

भू–पुरातत्व

मिट्टी और पत्थरों का अध्ययन ताकि भूगोल और पर्यावरण में हुए बदलाव को जाना जा सके।

समुद्रीय पुरातत्व

वह शाखा जिसमें समुद्र के अंदर डूबे जहाजों और तटीय संस्कृति का अध्ययन किया जाता है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र "भारतीय पुरातात्विक इतिहास और विकास" के माध्यम से पुरातत्व के अब तक के इतिहास और उसके विकास की व्याख्या करते हुए उसके उद्देश्यो को स्पष्ट किया गया हैं। इसकी विभिन्न शाखाओ का वर्णन करके उनकी व्याख्या करने के साथ ही उनके बीच के अन्तरों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा यह स्पष्ट किया गया हैं कि पुरातत्व किस तरह पूर्वी अफ्रीका मे पत्थर के औजारो के अवशेषो के अध्ययन से प्रारम्भ होकर आज वनस्पति पुरातत्व, आर्कियोमेट्री, जीव पुरातत्व, यद्ध पुरातत्व, पर्यावरणीय पुरातत्व, मानव जाति विज्ञान पुरातत्व, प्रायोगिक पुरातत्व, भू–पुरातत्व, समुद्रीय पुरातत्व आदि विभिन्न शाखाओ में विभाजित हो गया हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, भगवतशरण, "पुरातत्व का रोमांस",2014, पृष्ठ–222।
2. सहाय, डॉ शिवस्वरूप, "भारतीय पुरातत्व और प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ", 2007, पृष्ठ–167।
3. रंगाचार्या,एम.,"संस्कृत पुरालेखों का संक्षिप्त विवरण", 2014, पृष्ठ–230।
4. धानवी,ओम, "मोहन जोदडो",2007, पृष्ठ–118।
5. सिंह,भगवान,"कौशाम्बी (कल्पना से यथार्थ तक)", 2011, पृष्ठ–130।
6. तिवारी,राकेश,"पहियों के इर्द–गिद",1994, पृष्ठ–118।
7. तिवारी,राकेश,"सफर एक डोंगी में डगमग",1996, पृष्ठ–243।
8. तिवारी, विजय मनोहर, "भारत की खोज में मेरे पाँच साल", 2007, पृष्ठ–118।
9. मुहम्मद, के. के.,"मैं एक भारतीय",2012, पृष्ठ–230।
10. राय, रघुनाथ, "भारतीय इतिहास के कुछ विषय",1996, पृष्ठ–243।